15

''मसीह के नमूने का पालन करते हुए प्रेम में चलो''

(5:1–6)

अध्याय 5 में फिर से ''चलो'' का इस्तेमाल किया गया है। मसीह को नमूने के रूप में लेते हुए पौलुस ने इफिसुस के मसीही लोगों से आग्रह किया कि ''प्रेम में चलो'' और इस प्रकार से रहो, जो उन पवित्र लोगों को शोभा देता है जिन्हें मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास मिली है।

परमेश्वर और मसीह के प्रेम का अनुसरण करना (5:1, 2)

[1]इस लिए प्रिय बालकों की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो। [2]और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिए अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिए परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।

आयतें 1, 2. विशेष प्रकार से ''चलो'' के निर्देश (इफिसियों अध्याय 4—6)। में पौलुस का प्रासंगिकता का भाग बन जाते हैं। 5:1 में **इस लिए** शब्द यह दिखाता है कि यह शिक्षा उसी से जुड़ी हुई है जो पौलुस ने अभी-अभी लिखा था। अध्याय 4 में नया किया गया मन और नया व्यक्तित्व परमेश्वर का अनुसरण करके दिखाया जाना आवश्यक हैं।

सदृश्य *mimētai* का अनुवाद है जिससे हमें नकल के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''mimic'' मिला है। मसीही लोगों को **प्रेम में** चलते हुए **परमेश्वर** की ''नकल'' करनी आवश्यक है। ''परमेश्वर के सदृश्य'' होने की अवधारणा पुराने नियम का आदर्श है चाहे वहां पर अनुसरण करने की वास्तविक भाषा नहीं मिलती। परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों को कहा गया था, ''तुम पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूं'' (लैव्यव्यवस्था 19:2)। परमेश्वर की नकल करने की यह आज्ञा थी। ''जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।'' (लूका 6:36)। यीशु ने यह भी बताया, ''तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है'' (मत्ती 5:48)। परमेश्वर के **प्रिय बालकों** के रूप में मसीही लोगों को उसकी तरह बढ़ना चाहिए। इस पत्र में पौलुस ने पहले मसीही लोगों को परमेश्वर के परिवार में गोद लिए जाने के रूप में दिखाया था (देखें 1:5)। 5:1 में उसने कहा कि अपने प्रेमी पिता के जैसे बनकर हमें परिवार के स्वरूप में ढल जाना चाहिए। लोगों के सम्बन्ध में परमेश्वर के काम वह मानक होने चाहिए जिन से उसकी संतान लोगों से जुड़े।

4:24 में पौलुस ने दिखाया कि किस प्रकार नया मनुष्यत्व पहनकर मसीही लोगों के लिए

धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर जैसे बनना आवश्यक है। 4:32 में उसने दिखाया कि क्षमा और कोमलता दिखाने में भी हमें परमेश्वर के जैसे होना आवश्यक है। ''प्रेम में चलने'' का हमारा नमूना (5:2) परमेश्वर है जिस ने ''जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया'' (यूहन्ना 3:16) और मसीह है जिसने ''हमारे लिए अपने आपको बलिदान कर दिया'' (5:2)। 1 और 2 आयतों में परमेश्वर से मसीह में बदल जाना केवल इस तथ्य पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम को मसीह को देकर दिखाया, जबकि मसीह ने हम से प्रेम किया और हमारे लिए अपने आपको दे दिया।

परमेश्वर और मसीह के प्रेम के अनुसरण की बात के कारण पौलुस को बताना पड़ा कि यह प्रेम हम पर किस प्रकार से दिखाया गया: **मसीह ने ... हमारे लिए अपने आपको ... दिया**। ''अपने आपको दिया'' का अर्थ ''मृत्यु के लिए अपने आपको सपुर्द करना''[1] और ''हमारे लिए'' का अर्थ ''हमारी ओर से'' या ''हमारे लाभ के लिए'' उन सब के जो उसके उद्धार के दान को स्वीकार करते हैं।[2] पौलुस ने अपने पत्रों में बार बार इस बात को दृढ़ किया (रोमियों 4:25; 8:32; गलातियों 2:20; इफिसियों 5:25)।

भेंट करके बलिदान वाक्यांश मसीह की मृत्यु के उद्देश्य को परिभाषित करता है। वह पुराने नियम की भेंटों और बलिदानों को पूरा करने के लिए मर गया और अपने लहू बहाने के द्वारा उसने पाप के लिए संतुष्टि और क्षमा लाई (देखें इब्रानियों 10:14-18; 1 यूहन्ना 2:2; 4:10)। इसके अलावा जहां पाप ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच सम्बन्ध को बिगाड़ा वहीं मसीह की मृत्यु से उन में मेल हो गया (देखें रोमियों 5:11; 2 कुरिन्थियों 5:18, 19)। पौलुस ने जब मसीह की भेंट और बलिदान को **सुखदायक सुगंध** के रूप में दिखाया तो सम्भवतया परमेश्वर के नथनों में किसी सुन्दर महक के रूप में बलिदानों के सम्बन्ध में पुराने नियम की बातों पर ध्यान दिला रहा होगा (देखें उत्पत्ति 8:21; लैव्यव्यवस्था 1:9, 13, 17)। वह कह रहा था कि मसीह का बलिदान परमेश्वर को स्वीकार्य था। फिलिप्पियों 4:18 में भाइयों द्वारा उसके लिए किए गए आर्थिक बलिदान की बात करते हुए उसने ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल किया।

एक दूसरे के प्रति प्रेम दिखाने में इफिसियों के लिए परमेश्वर और मसीह का अनुसरण करना आवश्यक था। ''निश्चय ही दूसरों की भलाई की चिंता के कारण अपनी रुचियों को बलिदान करना समाज में एकता को बढ़ावा देने का सबसे बड़ा गुण है।''[3] जिस प्रेम की बात पौलुस ने की वह एक निर्णय है; यह केवल भावना नहीं बल्कि वह पसन्द है जिसे व्यक्ति चुनता है। इसके अलावा यह प्रेम सक्रिय है। इसे किए जाने वाले कामों में दिखाया जाता है न कि केवल बोले जाने वाले शब्दों से। अन्त में ऐसा प्रेम शर्तरहित है। यह प्रेम इस बात से तय नहीं होता कि प्रेमी क्या करता या नहीं करता है बल्कि प्रेम करने वाले के मन से तय होता है। मसीह में परमेश्वर का प्रेम, जो कि पसन्द का प्रेम कार्य का प्रेम, और शर्तरहित प्रेम है, प्रेम की वही किस्म है जिसका अनुसरण मसीही व्यक्ति को करना आवश्यक है।

आज्ञापालन की जीवन शैली जीना (5:3-6)

[3]और जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्यभिचार, और किसी प्रकार के अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो। [4]और न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्ठे

की, क्योंकि ये बातें सोहती नहीं, वरन धन्यवाद ही सुना जाए। [5]क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूरत पूजने वाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं। [6]कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे; क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न मानने वालों पर भड़कता है।

5:3–6 में पौलुस ने प्रेम के उस नियम की प्रासंगिकता दी जिसका परिचय उस ने 5:1, 2 में दिया था। पौलुस ने दिखाया कि जब कोई वैसे ही प्रेम करता है जैसे परमेश्वर करता है और जैसे मसीह करता है तो वह पापपूर्ण विचारों और कामों से दूर रहेगा। परमेश्वर और मसीह का अनुसरण करने का प्रयास करने वाला व्यक्ति गंदी बातों, अश्लीलता, भक्तिहीन बातें और बुरी बातों से जो इस व्यवहार के साथ चल सकती हैं, दूर रहेगा।

आयत 3. सबसे पहले पौलुस ने **व्यभिचार** की बात की। इसके लिए यूनानी शब्द *porneia* है जो "सैक्स की सामान्यता अनैतिकता को परन्तु विशेषकर वेश्याओं के साथ व्यभिचार और सम्भोग का संकेत देता एक व्यापक शब्द"[4] है। यूहन्ना 8:41 और प्रेरितों 15:20, 29; 21:25 में KJV में इसका अनुवाद "फोर्निकेशन" और NASB में इसका अनुवाद यही हुआ है।

"व्यभिचार" (*moicheia*) का इस्तेमाल यहां किसी दूसरे की पत्नी के साथ अवैध सम्भोग के लिए किया गया है, वहीं "फोर्निकेशन" में समागम, समलैंगिकता और व्यभिचार जैसे सभी अवैध शारीरिक सम्बन्ध आ जाते हैं। यहूदा 7 सदोम और अमोरा (देखें उत्पत्ति 19:1–11) का नाम उन नगरों के रूप में लेता है, जिनके रहने वालों ने अपने आपको "अश्लील अनैतिकता" के सपुर्द कर दिया था। इन नगरों के पापों का वर्णन करने के लिए यहूदा ने यूनानी शब्द *ekporneuō* का इस्तेमाल किया है। इसके अलावा उत्पत्ति 19 भी संकेत देता है कि सदोम के पुरुष उन दो पुरुषों के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाना चाहते थे जो प्रभु के दूत थे। विचाराधीन इन शब्दों के बाइबली उपयोगों की समीक्षा करने के बाद "व्यभिचार" को लोगों के बीच किए गए सैक्स के पाप के रूप में माना जाता प्रतीत होता है जिसमें उनमें से एक या दोनों का विवाह किसी दूसरे से हुआ है। जबकि "फोर्निकेशन" में व्यभिचार सहित (परन्तु इस तक सीमित नहीं) सभी प्रकार के शारीरिक पाप आ जाते हैं। उसी आयत में कई बार "व्यभिचार" और "फोर्निकेशन" का उल्लेख आ जाता है (देखें मत्ती 15:19; 19:9 [KJV]; मरकुस 7:21; इब्रानियों 13:4)।

NIV में *porneia* का अनुवाद "सैक्स की अनैतिकता" के रूप में हुआ है जो इस शब्द की व्यापक प्रकृति पर ज़ोर देता है। इसमें परमेश्वर द्वारा मना की गई सैक्स की कोई भी गतिविधि आती है, चाहे वह पुरुष और स्त्री के बीच जिनका एक-दूसरे से विवाह न हुआ हो, पुरुष और पशु के बीच (निर्गमन 22:19), पुरुष और पुरुष के बीच, या स्त्री और स्त्री के बीच सैक्स हो (रोमियों 1:26, 27)।

दूसरा, पौलुस ने **किसी प्रकार के अशुद्ध काम** की मनाही की। यहां पर इस्तेमाल यूनानी क्रिया शब्द *akatharsia* का अर्थ नैतिक रूप में "विचार और जीवन में अशुद्ध" है।[5] अन्य वचनों के साथ साथ इस वचन में *akatharsia* का सम्बन्ध सैक्स के पाप से है (देखें 2 कुरिन्थियों 12:21; गलातियों 5:19; कुलुस्सियों 3:5; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3, 7)। पौलुस ने

चाहा कि इफिसुस के लोग सैक्स के पाप के कार्य से ही नहीं बल्कि इसके विचार से भी दूर रहें।

पौलुस ने तीसरा उल्लेख **लोभ** का किया (''लालच''; NASB)। ''लालच'' (*pleonexia*) ''और पाने की इच्छा या जो उसके पास नहीं''[6] है। यह शब्द उस समस्या से मेल खाता है जिससे ''अनैतिकता'' और ''अशुद्धता'' (''गंदगी''; KJV) बढ़ते हैं। ''लोभ'' का अर्थ चाहे और भौतिक सम्पत्ति की और इच्छा हो सकता है, पर यहां पर इसका अर्थ सैक्सुअल व्यवहार के लिए लालची होने से है। अन्य वचनों में नया नियम *porneia* के साथ *pleonexia* का इस्तेमाल करता है जो यह सुझाव देता है कि लोभ का अर्थ भौतिक सम्पत्ति की इच्छा से बढ़कर है (देखें 1 कुरिन्थियों 6:9, 10; कुलुस्सियों 3:5)।

तुम में चर्चा तक न हो उसी का पूर्वानुमान है जिसे पौलुस ने आयत 12 में लिखा: ''क्योंकि उन के गुप्त कामों की चर्चा भी लाज की बात है।'' आयत 3 वाली मनाही का परिचय यूनानी भाषा के मजबूत और ज़ोरदार नकारात्मक शब्द *mēde* से किया गया है। पौलुस का तर्क यही रहा होगा कि इन पापों की चर्चा करने से ''ऐसा माहौल बन जाता है जिसमें उन्हें सहन किया जाता है और जिससे परोक्ष रूप में इन्हें और करने का बढ़ावा मिल सकता है।''[7]

जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, सैक्स के पापों से बचने की प्रेरणा देने वाला है। परमेश्वर के पवित्र लोगों का जीवन संसार के मानदण्ड से अलग है। परमेश्वर और मसीह का अनुसरण करने वाले होने के कारण हमें ''पवित्र और निर्दोष'' (1:4) होना आवश्यक है। ''योग्य'' (*prepō*) का सम्बन्ध मसीही व्यक्ति के पवित्र जीवन से है। (तीतुस 2:1 में इस शब्द के पौलुस के इस्तेमाल को देखें।) 1 थिस्सलुनीकियों 4:3–7 और 1 तीमुथियुस 2:10 में पौलुस ने सैक्स की अनैतिकता को मसीही लोगों के पवित्र जीवन से अलग बताया।

आयत 4. निर्लज्जता *aischrotēs* का अनुवाद है जिसका अर्थ है ''बेशर्म, सामान्य अर्थ में अनैतिक व्यवहार''[8]; परन्तु इसका इस्तेमाल **मूढ़ता की बातचीत** और **ठट्ठे** की बातों के सम्बन्ध में किया जाता है, इस कारण इसका अर्थ विशेष रूप में अश्लील बातचीत होगा। (देखें कुलुस्सियों 3:8, जहां पौलुस ने *aischrologia* का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है ''गालियां बकना'' या ''गंदी भाषा'' [NIV],) ''मूढ़ता की बातचीत'' *mōros* (''मूर्खता'') और *logos* (''भाषण'')[9] के मिश्रित शब्द *mōrologia* का अनुवाद है, जिसका अर्थ यहां पर सैक्स के पापों से सम्बन्धित मूर्खता भरी बातें करना है। पौलुस ने यहां पर ''ठट्ठे'' की मनाही को जोड़ दिया, जो *eutrapelia* का अनुवाद है, जिसका इस वचन में अर्थ सैक्स की गतिविधि का ''अश्लील ठट्ठे'' है।[10] पौलुस नहीं चाहता था कि इफिसी लोग सैक्स के पापों के चुटकुले बनाएं। इन पापों के प्रति ऐसा व्यवहार दिखाना उन में सहनशीलता का माहौल बनाना या उन में शामिल होना था। पौलुस ने कहा कि यह मौखिक पाप **सोहते नहीं** या परमेश्वर के पवित्र लोगों के लिए शोभा नहीं देते।

पवित्र लोगों के लिए उपयुक्त बात **धन्यवाद ही** है। धन्यवाद परोपकारी दानी के रूप में परमेश्वर को मानना है, जिसकी उपस्थिति में हम रहते और उसके पवित्र लोगों के रूप में जिसको हम जवाबदेह हैं। धन्यवाद पाप में रहना या उसके चुटकुले बनाने के विपरीत है। जो लोग पाप में रहते हैं, वे परमेश्वर का विचार नहीं करते और अन्य बातों के साथ वे धन्यवाद नहीं करते हैं।

आयत 5. प्रेरणा के रूप में पौलुस ने उन सभी को जो इन बुराइयों में भाग लेने वाले थे,

कठोर चेतावनी दी: **क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूरत पूजने वाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं।** यहां पर उसने यह विचार जोड़ा कि जो लोग लोभी या लालची हैं वे मूर्तिपूजक हैं। सैक्स के पाप का लालची होना, चाहे किसी के साथ बात किया जाना हो या स्वयं पाप, मूर्तिपूजा हो सकता है। मूर्तिपूजा उसे कहा जाता है जो परमेश्वर के आगे आ जाए और यहां पर मूर्ति सैक्स का पाप है। जो लोग इस प्रकार से मूर्तिपूजा करते हैं उन्हें ''मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं'' है। पौलुस ने पहले पवित्र लोगों की मीरास की बात की (1:14, 18) और यह चेतावनी पवित्र लोगों के लिए किसी भी ऐसी बात से बचने के लिए है जो हमें हमारी मीरास से वंचित कर सकती है। राज्य से निकाले जाने की सम्भावना निकासी की बात 1 कुरिन्थियों 6:9 और गलातियों 5:21 में कह दी गई है जिससे मसीही लोगों को पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा मिले। जो लोग पापों में जीवन बिताते हैं पौलुस ने उन्हें परमेश्वर और मसीह के शासन जो कि राज्य है, के बाहर रहने वाले लोग बताया जो अनन्त राज्य के किसी भी मीरास को खो रहे हैं।

आयत 6. चेतावनी देने के बाद पौलुस ने कहा, **कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे; क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है।** इफिसियों को किसी को भी उन्हें इस सोच के भ्रम में डालने की अनुमति नहीं देनी थी कि अनैतिक व्यवहार में लग जाओ या उसे सहन कर लो। ऐसा बिगाड़ केवल उन्हीं लोगों के मनों से निकले व्यर्थ शब्दों से हो सकता था जो ''आज्ञा न मानने वालों'' पर परमेश्वर के क्रोध के आने को नज़रअन्दाज़ करते थे। पवित्र शास्त्र में आम तौर पर स्पष्ट विशेषता वाले व्यक्ति को उसी खूबी का ''पुत्र'' या ''संतान'' कहा जाता था (मरकुस 3:17; प्रेरितों 4:36)। 2:3 में पौलुस ने कहा कि इफिसी लोग मसीही बनने से पहले ''क्रोध की संतान'' थे क्योंकि वे समाज के उसी भाग के थे जिसकी पहचान परमेश्वर का क्रोध पाने वालों के रूप में की गई। आयत 6 में पौलुस ने ''आज्ञा न मानने वालों'' की बात की। पहली सदी के लोग जो यह मानते और सिखाते थे कि सैक्स का पाप करने वालों पर परमेश्वर का न्याय नहीं होगा उन्हें आज्ञा न मानने वाले कहा जाता था (देखें रोमियों 1:18-32)।

पौलुस ने यह समझाने के लिए कि हमें प्रेम में चलकर परमेश्वर और मसीह का अनुसरण करना चाहिए सैक्स के पापों की चर्चा का इस्तेमाल क्यों किया? सीधा सा उत्तर है कि जैसे परमेश्वर और मसीह प्रेम करते हैं, वैसे प्रेम करने का अर्थ किसी दूसरे की भलाई चाहना है अर्थात उसकी सहायता करना है न कि उसे हानि पहुंचाना, उसे ऊंचा उठाना है न कि उसे बर्बाद करना। सैक्स के पापों में विपरीत प्रभाव है; वे बाइबली प्रेम को नहीं दिखाते बल्कि निजी सन्तुष्टि के लिए लोगों का इस्तेमाल करके उनके प्रति घृणा को दिखाते हैं। सैक्स को परमेश्वर ने बनाया है और जब परमेश्वर की मंशा को ध्यान में रखते हुए इसे एक-दूसरे के साथ बांटा जाता है तो यह बहुत सुन्दर है। एक पुरुष और एक स्त्री के बीच, विवाह में, प्रेम में और जीवन भर के समर्पण में सैक्स को परमेश्वर की ओर से ही बनाया गया है। एक पुरुष और एक स्त्री के लिए विवाह के बाहर सैक्स में शामिल होना विवाह के समर्पण और जिम्मेदारियों के बिना विवाह के लाभ लेने की चेष्टा करना है। विवाह के बाहर सैक्स का अर्थ किसी का इस्तेमाल करना है और यह उनसे प्रेम करना कदाचित नहीं है। यदि यह सैक्स सहमति से भी हो तौभी यह बिना उस

समर्पण के जो ऐसे सम्बन्ध में होना चाहिए व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए किसी दूसरे का इस्तेमाल करना है। सैक्स का पाप किसी दूसरे से इतना प्रेम करने की बात नहीं है जिससे अनैतिकता का सामना किया जा सके। बल्कि यह इतना कम प्रेम करने की बात है कि ज़िम्मेदारी को स्वीकार न किया जाए। यदि कोई व्यक्ति विवाह की जिम्मेदारियों के प्रति समर्पित नहीं है तो उस व्यक्ति को उन लाभों का आनन्द लेने का कोई अधिकार नहीं है, जिसे परमेश्वर ने विवाह के लाभों के साथ जोड़ा है। विवाह के बाहर सैक्स गलत है क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा कहा है (इब्रानियों 13:4), पर यह इसलिए भी गलत है, क्योंकि लोगों का इस्तेमाल नहीं बल्कि उन से प्रेम करना आवश्यक है।

प्रासंगिकता

प्रेम में चलना (5:1-6)

5:1-6 में पौलुस ने चार मार्गों में से दूसरे मार्ग पर चर्चा की जिन में महिमामय कलीसिया के सदस्य होने के नाते मसीही लोगों को ''चलना'' चाहिए। पत्र के इस भाग में पौलुस ने कहा कि हम ''प्रेम में चलें।''

''परमेश्वर के सदृश।'' हम परमेश्वर के सदृश बनने और मसीह के पीछे चलने के लिए ''प्रेम में चलते'' हैं। पौलुस ने पहले दिखाया था कि पापियों के लिए परमेश्वर ने जो कुछ भी किया है वह प्रेम की प्रेरणा से ही निकला है (देखें 2:1-10)। परमेश्वर की संतान के रूप में हमें वैसे ही प्रेम करके जैसे वह करता है अपने आपको परिवार के जैसे बनाना आवश्यक है (5:1)।

पाप के लिए सिद्ध बलिदान अर्थात परमेश्वर को स्वीकृत बलिदान के रूप में मसीह ने हमारे लिए अपने आपको दान इसलिए दिया क्योंकि वह हम से प्रेम करता था। जीने के लिए मसीह हमारा नमूना है (देखें रोमियों 8:29; 1 पतरस 2:21) और हम दूसरों से प्रेम करके मसीह की नकल करते हैं (5:2)।

''पवित्र लोग'' या ''पापी।'' हम ''पवित्र लोगों'' (5:3) और ''आज्ञा न मानने वालों'' (5:6) के जीवनों में अन्तर करने के लिए ''प्रेम में चलते'' हैं। पौलुस ने ''आज्ञा न मानने वालों'' के जीवनों में निष्कपट प्रेम के न होने को समझाने के लिए सैक्स के पापों का उदाहरण इस्तेमाल किया (5:3-5)।

''पवित्र लोगों'' की पहचान दूसरों के प्रति उनके प्रेम से होती है। व्यक्तियों के रूप में हमें उनका सम्मान करना और उनके लिए बेहतरीन करने की इच्छा करना आवश्यक है। सैक्स के पाप करने वाले लोग प्रेम करने वाले नहीं हैं क्योंकि वे अपने सुख के लिए दूसरों का इस्तेमाल कर रहे होते हैं।

''प्रेम में चलना'' इस प्रकार से व्यवहार करना है जो पवित्र लोगों के लिए ''योग्य'' है। हम ''धन्यवाद'' करके (5:3, 4) उस छल कपट वाली जीवन शैली से बचाव करके जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है (5:6) ''प्रेम में चलते'' हैं।

मसीही व्यवहार की पहचान परमेश्वर और मसीह का प्रेम है। यह जीवन शैली उस जीवन शैली से ऊंची है जो कभी हम जीते थे और जिसमें आज भी संसार रहता है।

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]द *एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:350 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [2]वही। [3]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 312. [4]वही, 321. [5]सी. जी. विलके एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. एवं संशो. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 21; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 34 भी देखें। [6]स्पायरस, ज़ोडिएट्स, संपा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1991), 948. [7]लिंकोन, 322. [8]सैलमण्ड, 352. [9]ज़ोडिएट्स, 938. [10]वही, 918.